AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

शिवानी व्यक्तिदर्शन और सृष्टि एक अध्ययन

शिव किशोर राय, डॉ. राजेश कुमार शर्मा, डॉ. शिवानी शर्मा
हिंदी विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPERSUBMITTED BY MEFOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINEPAPER.IFANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHERWILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MYCONTENT FROM THE JOURNALWEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANYTECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FORTHE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDENBY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHORATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

हिंदी साहित्य में महिला साहित्यकारो की उपस्थिती कोई नई बात नही है। महिलाओंने हिंदी साहित्य ही नही वरन् भारतीय साहित्य के कथ्य के साथ से ही प्रेरक और सर्जक की भूमिका निभाते हुए भाव–प्रवण प्रतिभा का परिचय दिया है। इसी परंपरा और विरासत पर फलित हिंदी साहित्य का इतिहास महिलाओंका संवेदनात्मक सृजनशीलता की साक्षी रही है। यह दूसरी बात है की आजकल महिलाओं की भागीदारी साहित्य के साथ हर क्षेत्र में बढ़ गई है। और साथ ही इनके संबंध तथा सरोकार तथा सृजन के संदर्भ भी बदल गए है। सृजन यात्रा की अनवरत् धारा के प्रवाह में ऐसा परिवर्तन का बदलाव भी आवश्यक होता है।

मुख्यशब्दः साहित्य, परिवर्तन, सरोकार तथा सृजन

व्यक्तिदर्शन

"कृतित्व और व्यक्तित्व में कार्य–कारण का सम्बन्ध है। व्यक्तित्व के सूत्र जीवनभर के कृत्यों में फैले रहते है और प्रत्येक कृत्य की जडे व्यक्तित्व में बडी गहरी जूडी गयी होती है और वही से वे अपना भोजन ग्रहण करती है। इसलिए कृतित्व को विवेचन से पहले व्यक्तित्व को समझने का प्रयत्न अनिवार्य हो जाता है।

इसलिए किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का ज्ञान लेना अनिवार्य होता है। इसी तरह से डॉ. दीनानाथ शरण के शब्दो में "साहित्यकार का साहित्य उसके जीवन तथा व्यक्तित्व से अछूता रह ही नहीं सकता । अतः किसी के भी साहित्य को समझने के लिए पाठको को उसका पूरा–पूरा रसास्वादन करने के लिए समालोचको को उसकी सही–सही समीक्षा करने के लिए साहित्यकार की जीवनी तथा व्यक्तित्व को जानना ही चाहिए ।''

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

साहित्यकारों के विचारो से ज्ञात होता है कि किसी भी व्यक्तित्व का ज्ञान उसके जीवन से जूडा होता है। और इसीलिए उसके व्यक्तित्व को जानने के लिए पूरी–पूरी जानकारी भी आवश्यक होती है।

गौरापंत शिवानी

आधुनिक गद्य लेखिका गौरापंत शिवानीजी हिंदी साहित्य की सम्मानित एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार है । जिनका लेखन साहित्य अनमोल धरोहर है। शिवानीजी का जन्म राजकोट सौराष्ट्र में १७ अक्तुबर १६२३ को ब्रह्मबेला में समृद्ध एवं सुशिक्षित परिवार में हुआ । उन्ही के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय

शिवानीजी को 'शिवानी' नाम से ज्यादा तर जाना जाता है। पर उनका असली नाम 'गौरापंत' है। बचपन मे 'गौरा' था । शिवानीजी का जन्म पंत कुल में होने की वजहसे परिवार के सभी लोग उन्हे जैसे सरस्वती का वरदहस्त मानते थे। और इसलिए 'गौरा' कहते थे।

शिवानीजी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी , क्योंकि गाँव में पाठशालाएँ उपलब्ध नही थी । साथ ही उनके दादाजी का स्वभाव कठोर होने की वजह से तथा अनुशासन के कारण लडकियो को अकेला बाहर भेजना उन्हे पसंद नही था । साथ ही मुस्लिम रियासत की पर्दा प्रथा का प्रभाव उनपर होने के कारण वह पर्दा प्रथा के भी अनुरागी थे शिवानीजी को पढ़ाने के लिए घर पर ही शिक्षा की व्यवस्था की गई थी । तथा उनको घर–पर पढाने के लिए उनके बंगले पर 'मि. एण्ड मिसेज स्मिथ' आते थे।

कृतित्व

शिवानी की साहित्यिक विधाओं में उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखा चित्र, संस्मरण एवं बालसाहित्य आदि आते हैं अर्थात् शिवानी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी का जौहर दिखाया है। और सभी में इतनी सशक्त लेखनी चलाई है जो उन्हें सफलता की ओर ले गई है।

मायापुरी (1957)
चौदह फेरे – (1960)
कैंजा– (1962)
कृष्णकली – (1962)
भैरवी – (1969)
श्मशान चम्पा – (1972)
सुरंगमा– (1979)
रतिविलाप– (1977)
विषकन्या – (1977)
रश्या – (1977)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

माणिक – (1977)
किश्नुली – (1979)
कृष्णवेणी – (1981)
गैंडा– (1981)
चल खसरो घर आपने – (1982)
विवर्त– (1984)
महोब्बत– (1984)
पूतोंवाली– (1986)
स्वयंसिद्धा – (1987)
कस्तुरी मृग – (1987)
अतिथि– (1987)
कालिन्दी– (1994)
उपप्रेती– (1997)
चील गाड़ी

शिवानी का साहित्य क्षेत्र में योगदान

स्वातन्त्रयोतर महिला तथा कथा लेखक गांव में गौरा पंत शिवानी का स्थान आदित्य हैं। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य लेखन में उनका नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। हिंदी कहानी उपन्यास संस्मरण निबंध रिपोतार्ज आदि विधाओं एवं बाल साहित्य को समृद्ध करने में उनका योगदान अविस्मरणीय है। शिवानी ने नारी मन को बहुत ही गहराइयों से अनुभूत किया है एवं उसे चित्रित किया है इसलिए उनके नारी पात्र सभी पाठकों के मन में गहरी छाप छोड़ते हैं। शिवानी ने कहीं प्रेम और विवाह की समस्याओं को तो कहीं रोमांस एवं राजनीतिक हर जगह नारी अपनी सौंदर्य के कटु अनुभव के साथ खड़ी नजर आती हैं। शिवानी एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न थी। उन्होंने विभिन्न भाषाओं का ज्ञान था अपने भाषा ज्ञान एवं शब्द भंडार को समृद्ध करने में शिवानी सदा ही जिज्ञासु रही इसलिए वे अपने उपन्यासों के कथ्य शिल्पगत वैशिष्ट्य एवं संवेदना के कारण अभिजात्य वर्ग के पाठकों में भी विशेष लोकप्रिय रही। हिंदी साहित्य जगत में शिवानी एक ऐसी शख्सियत रहीएहिंदी संस्कृत गुजराती बंगाली उर्दू एवं अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ रही। शिवानी अपनी कृतियों में उत्तर भारत के कुमायूं क्षेत्र के आसपास की लोक संस्कृति की झलक दिखाने और किरदारों के बेमिसाल चरित्र चित्रण करने के लिए जानी जाती हैं। शिवानी ने 12 वर्ष की उम्र में पहली कहानी प्रकाशित की। शिवानी का लेखन कार्य 21 मार्च 2003 को उनके निधन तक निरंतर जारी रहा उनकी अधिकतर कहानियां एवं उपन्यास नारी प्रधान रहे। उनकी लिखी कृतियों में कृष्णा कली भैरवी अमोदर शांतिनिकेतन विषकन्या आदि जैसी महत्वपूर्ण कृतियां है।

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

निष्कर्ष

शिवानी के कथा संग्रह में मानवीय संवेदना अधिक मिलती हैं। यह समझना सच्ची अनुभूति के धरातल पर उत्पन्न हुई है इन्होंने यथार्थ घटनाओं का ऐसा मार्मिक वर्णन किया है कि पाठक उन घटनाओं से नाता स्थापित कर संवेदना की अनुभूति करने लगता है। शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना का तत्व अधिक प्रभावशाली पद्धति से अपनाया गया है। शिवानी की कहानियों में उपन्यासों में मानवीय संवेदना गहरी हैं। शिवानी के कथा साहित्य में अभिजात वर्ग से लेकर एक–एक दाने को तरसने वाले निम्न वर्ग तक के जीवन के कड़वे अनुभव को गहरी संवेदना के साथ प्रकट किया है। शिवानी ने अपने कथा साहित्य में मानतावादी दृष्टि अधिक मिलती हैं। शिवाजी ने ऐसे पात्रों का सृजन किया है जिन्होंने लोक कल्याण के लिए अपना सारा जीवन सारी संपत्ति न्योछावर कर दी। शिवानी ने नारी जीवन से संबंधित अनेक समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपनी कथा साहित्य में किया है। नारी के सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण बहुत ही विस्तृत रूप में किया है। समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण शिवानी ने किया है। निसंदेह समकालीन महिला लेखिकाओं में शिवानी का स्थान महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शुक्ला आचार्य रामचंद्र 'हिंदी साहित्य का इतिहास' काशी नगरी प्रचारिणी सभा, संस्करण, पृष्ठ संख्या ,16, सन 2018.
2. शिवानी ,किशन कुंली, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या 60, सन 2007.
3. शिवानी, दो सखियां, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 62, सन 2007.
4. शिवानी, कालिंदी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली , पृष्ठ संख्या 20, सन 2007.
5. समाजशास्त्र एक विधिवत विवेचन, हैरी एंड जॉनसन, हिंदी अनु. योगेश अटल, पृष्ठ संख्या 145, सन 1977.
6. प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–पुरुष संबंधों का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन,पृष्ठ संख्या 67, सन 1983.
7. हीरा लाल लोहार, शिवानी के उपन्यास और सामाजिक सांस्कृतिक संवेदना, पृष्ठ संख्या 22, सन 2016.
8. शुक्ला आचार्य रामचंद्र श हिंदी साहित्य का इतिहासश काशी नगरी प्रचारिणी सभा , संस्करण , पृष्ठ संख्या ,16, सन 2018.
9. शिवानी ,किशन कुंली, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या 60, सन 2007.
10. शिवानी, दो सखियां, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 62, सन 2007.
11. शिवानी, कालिंदी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली , पृष्ठ संख्या 20, सन 2007.

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/Guide Name /Educational Qualification/Designation /Address of my university /college /institution/Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

शिव किशोर राय,
डॉ. राजेश कुमार शर्मा,
डॉ. शिवानी शर्मा